महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का भोजपुरी समाज, वाराणसी द्वारा आयोजित कार्यक्रम (दिनांक 06 नवम्बर, 2015) के अवसर पर सम्बोधन

सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य (प्रो0) यदुनाथ प्रसाद दूबे जी, इसी विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति आचार्य वशिष्ठ त्रिपाठी जी, आई0 आई0 टी0 (बी0एच0यू0) के पूर्व निदेशक प्रो0 एस0 एन0 उपाध्याय जी, इस संस्था के निदेशक डॉ0 सुरेन्द्र कुमार जी, 'विद्वत् परिषद् काशी' के अध्यक्ष ज्योतिषाचार्य डॉ0 कामेश्वर उपाध्याय जी, 'भोजपुरी समाज, वाराणसी' के अध्यक्ष श्री सोमनाथ ओझा जी, श्री चन्द्रनाथ ओझा जी, सभागार में उपस्थित सभी विद्वतजन, छात्र–छात्राओं, भोजपुरी समाज के सभी पदाधिकारीगण–सदस्यगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, भाइयों एवं बहनों।

भारत की परम वरेण्य नगरी वाराणसी, धर्म, संस्कृति कला को अपने प्राणों में बसानेवाली काशी की पावन भूमि पर 'भोजपुरी समाज' द्वारा आयोजित 'सम्मान समारोह' में आपने मुझे आमंत्रित किया, इसके लिए मैं आपके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

'भोजपुरी समाज' नामक संस्था भोजपुरी भाषा, संस्कृति, साहित्य, समाज – सबके उन्नयन एवं विकास के प्रति पूरी तरह तत्पर एवं प्रयासरत है, यह जानकर बहुत खुशी हुई है। कोई सजग एवं सचेष्ट समाज ही राष्ट्र के सम्यक् विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। भोजपुरी भाषी क्षेत्र, स्वतंत्रता आन्दोलन–काल एवं उसके पूर्व से ही राष्ट्र की एकता, स्वतंत्रता एवं सम्प्रभुता के लिए सदैव तत्पर रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की अगुआई में चले स्वतंत्रता–आन्दोलन एवं उसके पूर्व सन् 1857 के स्वातंत्र्य–समर में भी भोजपुरी क्षेत्र के महान क्रांतिकारी पूज्य मंगल पाण्डेय एवं बाबू वीर कुँवर सिंह की वीरता से भारतवर्ष की क्रांति–गाथा गौरवान्वित है।

मित्रों, भोजपुरी भाषा, समाज और संस्कृति पर चर्चा के क्रम में सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ0 जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक ''लिंग्वस्टिक

सर्वे ऑफ इंडिया' ;स्पदहनपेजपबैनतअमल वि प्दकपंद्ध में कुछ विचार व्यक्त किए हैं। उनके कथन का हिन्दी रूपान्तरण यही है कि ''भोजपुरी उस शक्तिशाली, स्फूर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है, जो परिस्थिति और समय के अनुकूल अपने को बनाने के लिए सदैव प्रस्तुत रहती है तथा जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान में सभ्यता फैलाने का श्रेय बंगालियों और भोजपुरियों को ही प्राप्त है। इस काम में बंगालियों ने अपनी कलम से प्रयास किया और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।'' दरअसल, भोजपुरियों के लिए 'लाठी' उनके आत्म–विश्वास का प्रतीक है। यह लाठी अन्याय और असत्य के प्रति उनके असहिष्णु स्वभाव और प्रबल प्रतिकार का भी प्रतीक है। जिस प्रकार आयरलैंड के निवासी हाथ में डंडा लेकर चलने के शौकीन होते हैं, उसी प्रकार लम्बे कद वाले शक्तिशाली भोजपुरियों को हाथ में लाठी लिए अपने खेतों पर सहज ही घूमते देखा जा सकता है।

किसानी चरित्र भोजपुरियों का आम चरित्र है। एक आम भारतीय किसान जितना परिश्रमी, निश्छल, स्पष्टवादी, निर्भीक और त्यागी होता है, एक भोजपुरिया जवान भी इन सभी गुणों से परिपूर्ण होता है। एक भोजपुरिया की सही छवि भोजपुरी के सुप्रसिद्ध कवि भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' की इन पंक्तियों में देखी जा सकती है–

''झूठ ना बखाने जाने, छूत–छात ना माने–जाने
माने–जाने सभके, ना जाने जी हजूरिया।
आन पर लड़ावे जान, जान के ना जान जाने
चले के उतान जाने, तान के लऊरिया।
बानी मरदानी जाने, चाल मस्तानी 'भानु'
होला एक पानी के , मरद भोजपुरिया।''

–बन्धुओं, भोजपुरी समाज के लोग सहज आत्मीयता और उदारता के भाव से सराबोर रहते हैं। भोजपुरी समाज और संस्कृति में मानवीय संवेदना कूट–कूट कर भरी रहती है। कमरतोड़ परिश्रम से जीविका प्राप्त कर पूरे मनोयोग से काम करना, कष्टों और विपरीत परिस्थितियों

को सामान्य भाव से झेल लेना – इन सबके मूल में भोजपुरी भाषियों में मानवीय संवेदना का अजस्र–स्रोत होना ही है।

भोजपुरी समाज के लोग चूँकि परिश्रमी होते हैं, अतएव उनका स्वास्थ्य भी प्रायः ठीक ही रहता है। ये खूब घुमक्कड़ प्रकृति के होते हैं। बहुत दूर–दूर तक, यहाँ तक कि विदेशों में भी निकल जाना इनके लिए सहज है। पर एक बात है, ये जहाँ भी जाते हैं, अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बूते वहाँ के लोगों में काफी लोकप्रिय हो जाते हैं। और तो और उस स्थान के सांस्कृतिक विकास में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगते हैं। मॉरिशस देश इसका ज्वलंत उदाहरण है।

भोजपुरी भाषा आज उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश आदि के एक विस्तृत भू–भाग लगभग 43 हजार वर्गमील में बोली–पढ़ी जाती है। हॉलैन्ड, थाईलैंड, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, फीजी, मॉरिशस, त्रिनिडाड, नेपाल आदि देशों में भी भोजपुरी भाषा और साहित्य के रचयिता और अनुरागी–जन हैं। इतने विस्तृत भू–भाग की भोजपुरी भाषा और इसके विपुल साहित्य के सम्यक् रूप से प्रकाशन और संग्रह की आज नितान्त आवश्यकता है।

लोकभाषाओं के प्राण लोकजीवन में व्याप्त लोकगीत होते हैं। भोजपुरी लोकगीतों और विशेषकर समाज में व्याप्त संस्कार गीतों के भी गायन और संग्रह की जरूरत है। भोजपुरी के विकास में भोजपुरी सिनेमा का भी बहुत बड़ा योगदान है। आज आवश्यक है कि सामाजिक समरसता, सद्भावना एवं विकासप्रिय स्वस्थ वातावरण के निर्माणार्थ भोजपुरी सिनेमा, कलाकार, साहित्यकार सभी एक साथ मिलकर प्रयास करें। देशभक्ति, सामाजिक सुधार, सद्भावना और भारतीय संस्कृति की मूल भावनाओं को आत्मसात करनेवाले गीत–संगीत और साहित्यिक रचनाएँ ही देश को मजबूती प्रदान करेंगी। 'भोजपुरी समाज' के लोग, इस दिशा में प्रयासरत हैं, हमें यह जानकार बहुत खुशी हुई। मुझे बताया गया है कि विभिन्न अवसरों पर साहित्यिक आयोजनों और मिलन–समारोहों के माध्यम से 'भोजपुरी समाज' नामक यह संस्था सामाजिक सद्भावना और भाईचारा विकसित करने की दिशा

में बराबर तत्पर रहती है। मैं इन सत्प्रयासों के लिए आप सबको साधुवाद देता हूँ।

समाज के विभिन्न प्रक्षेत्रों के जिन गणमान्य लोगों को संस्था ने आज सम्मानित किया है, सभी अपनी–अपनी सेवाओं के लिए ख्यात और लब्धप्रतिष्ठ रहे हैं। आज सम्मानित सभी विद्वदजन एवं गणमान्य व्यक्तियों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ।

सारस्वत–साधना की तपोभूमि काशीनगरी में आपने मुझे आमंत्रित किया, साधकों और आराधकों का साहचर्य प्राप्त करने का मुझे सुअवसर प्रदान किया – इसके लिए, मैं आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ और 'भोजपुरी समाज' के अध्यक्ष श्री सोमनाथ ओझा सहित इस संस्था के सभी अधिकारियों– सदस्यों और काशी–नगरी के सभी बहनों–भाईयों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।